बसंत अब दूर नहीं : खेलों के शहर में संगीत का मेला

नरेश कुमार

ढोल की आवाज़ सुनाई देते ही ज़मीन छोड़ देती हैं एड़ियाँ पंजाबियों की। तुम्बी की एक तार को छेड़कर ऊँचे स्वर में गाए जाते हैं कभी क़िस्से, कभी साके, तो कभी हीर ...। इन सबके बीच हर गुरुद्वारे में रोज़ हुआ करती हैं आसा दी वार, बिलावल की चौकी और धनासरी, गौड़ी पूर्वी या तुखारी में गाते हैं रागी शबद तथा संतों की बानी।

दरिया-ए-सतलुज और दरिया-ए-ब्यास के बीच का दोआब इलाक़ा। इसी दोआब में जी टी रोड पर बसा शहर जालन्धर, जो समेटे है अपने अन्दर पुराणों की कथाएँ, देव-दानव संघर्ष, अज्ञातप्राय शक्तिपीठ, नाथ योगियों की परम्परा; विभाजन के बाद छह बरस तक पंजाब की कामचलाऊ राजधानी होने का गौरव और दुनिया-भर के तमाम खिलाड़ियों की ज़रूरतें पूरी करने वाला एक शहर।

इस शहर ने देखा है सहगल, जगजीत सिंह तथा परगट सिंह जैसे अनेक नामी लोगों का बचपन, इस शहर ने देखे हैं डॉ. बदरुद्दीन के हाथों से हुए हज़ारों करिश्मे। और यही शहर गवाह है बँटवारे के उस ज़हरीले मौसम का जिसकी हवाएँ निगल गयीं इस फ़रिश्ते का लगभग सारा का सारा कुनबा। हैरानी होगी आपको यह जानकर कि हिन्दुस्तान के सबसे ज़्यादा न्यूज़ प्रिंट किसी महानगर में नहीं बल्कि इसी शहर में काले होते हैं।

क्रिसमस की रात, जब दुनिया भर में गूँज रही हैं प्रार्थना सभाएँ तथा गिरजों की घंटियाँ और सारा संसार मना रहा है उस अमन के पैग़म्बर का जन्मदिन, 'संपर्क क्रान्ति एक्सप्रेस' में बैठ इस शहर की ओर क्या खोजने जा रहा हूँ मैं?

कड़कड़ाती ठंड में पारे के गिरने का समाचार सुनते ही जब लोग दुबक लेते हैं रज़ाइयों में और साढ़े नौ-दस बजे ही ओढ़ लेता है शहर कोहरे की चादर के साथ-साथ सन्नाटा भी, देवी तालाब मंदिर के प्रांगण में ये कैसा रतजगा है? जहाँ रात के तीन बजे भी ढाई-तीन हज़ार लोग जमे बैठे हैं। चलिए, पंडाल के बाहर बैठे आग ताप रहे सरदार साहब से पूछते हैं। मेरे हाथ में टेप रिकॉर्डर देखकर ख़ुद ही शुरू हो गए, "आय एम सेवन्टी थ्री, प्रीतम सिंह खालसा, फ़ादर ऑफ़ फ़ोर चिल्ड्रन, ग्रांड फ़ादर ऑफ़ एट चिल्ड्रन, बट जस्ट एज़ ए ब्वॉय ऑफ़ स्वीट सिक्सटीन" आगे बिना ब्रेक लगाए अंग्रेज़ी में ही ... सात दिन में अमृतसर से मुम्बई और सात दिन में वापस, बारह घंटे में अमृतसर से दिल्ली और बारह

घंटे में वापस, "आय एम द फ़ास्टेस्ट साइक्लिस्ट इन द वर्ल्ड, ऐंड माय नेक्स्ट टारगेट इज़ सिडनी इन 2009 ... मुझे अपने जवान, गर्वीले, शानदार पंजाब के लिए नौवाँ गोल्ड मेडल जीत कर लाना है।"

सरदार साहब आप हरिवल्लभ कब से आ रहे हैं?

"ओह! पिछले दस सालों से। मेरा ताल्लुक़ डिस्ट्रिक्ट होशियारपुर के बोहन गाँव से है। मैं किसी देश का नागरिक नहीं बनूँगा। पैसा मेरे लिए कुछ नहीं है। जो प्यार मुझे पंजाबियों ने दिया है, मुझे कहीं नहीं मिलेगा।"

सरदार साहब हरिवल्लभ ...

"आय एम एन्ज्वॉइंग म्यूज़िक हेयर" ... और सत श्री अकाल जी कहते हुए किसी और से मुख़ातिब हो गए।

सरदार साहब, ख़ूब बताए आपने अपने कारनामे। तिहत्तर बरस की उम्र में भी आप नाप देते हैं साइकिल से मीलों-मील लेकिन आपकी ये सफ़ेद दाढ़ी देखकर हम तो कुछ और सुनने आए थे।

इस वक़्त यहाँ बिखर रहा है उस्ताद रईस ख़ाँ साहब की सितार का जादू, कल यहाँ गूँजी थी महेश भागवत की शहनाई, उल्लास बापट का संतूर और सरहद के उस पर से आए तारी साहब का तबला। कल भी रहेंगे लोग यहाँ और गूँजेगा शहर-ए-जालन्धर की फ़िज़ाओं में शास्त्रीय संगीत और ज़रूर गूँजेगा राग बसन्त या राग बहार। जो तोड़ डालेगा सर्दी की सारी ठिठुरन, पतझड़ की सारी नीरसता, और बिखर जाएगी सारे माहौल में फूलों की पंखुड़ियों के साथ-साथ बसन्त की मादकता।

बुज़ुर्गवार प्रीतम सिंह खालसा जी! मैं जालन्धरी नहीं हूँ। मैंने तो बस ख़बरें ही सुनी हैं उस दहशत भरे दशक की जब गोलियाँ कर देती थीं शहर भर को ख़ामोश। सूरज ढलते ही बंद हो जाती थी हर हलचल। क्या तब भी गाया जाता था राग बहार?

मुझे किताबों ने बताया कि मेला एक सौ तीस बरस पुराना है और होता रहा है साल दर साल। शाह सिकन्दर का कहर तो झेल गया था देवी तालाब लेकिन क्या दुबक गयी थी बहार कहीं आतंक

को हाथ में बंदूक़ लिए आते देख?

"वैसे कभी बन्द नहीं हुआ सम्मेलन ... बात शायद उन्नीस सौ बयासी या तिरासी की है। सम्मेलन चल रहा था, एक वायरलेस मिला। कुछ उग्रवादी चल पड़े हैं अमृतसर से। ख़ास तौर पर कुमार साहब[1] के लिए, और जलन्धर आ रहे हैं। नेचुरली सिक्योरिटी वालों ने कुमार साहब से कहा कि आप कहीं दूसरी जगह चले जाइए। कुमार साहब चले गए लेकिन सम्मेलन चलता रहा। आगे हालात एकदम ख़राब हो गए। हर साल हवन होता था और हवन के बाद ही एक छोटी-सी सभा दिन में ही कर लेते थे। क्योंकि छह बजे के बाद तो पंजाब में कर्फ़्यू लग जाता था। किसी तरह की पब्लिक मीटिंग तो दूर पाँच आदमियों का इकट्ठा होना भी मना था। इसलिए सवेरे की सभा होती थी, लोकल आर्टिस्ट आते थे। क्योंकि ज़ाहिर-सी बात है कि बाहर का आर्टिस्ट पंजाब में आने से डरता था।"

(राकेश दादा, कोषाध्यक्ष हरिवल्लभ महासभा, 16 मार्च, 2006)

फिर ज़िन्दा हुआ सम्मेलन, फिर गूँजा राग बहार ..., लेकिन ये कैसी तनातनी हुक्मरानों और शहर वालों के बीच?

"1989 में जब सरदार बेअंत सिंह जी की गवर्नमेंट आयी तो उन्होंने सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने का काम एक मिशन के तौर पर लिया। सम्मेलन चल निकला और अख़बारों में बड़े-बड़े इश्तेहार दिए गए ताकि लोग बेख़ौफ़ होकर सम्मेलन में आएँ। एक संदेश जाए कि पंजाब नॉर्मल है। बड़े-बड़े आर्टिस्टों को बुलाया गया। पहले दिन सरदार बेअन्त सिंह ख़ुद आए उद्घाटन के लिए और दूसरे दिन के पी एस गिल आए। सिक्योरिटी मुस्तैदी से काम करे इसलिए तीनों दिन एक-एक मिनिस्टर की रात भर सम्मेलन में बैठने की ड्यूटी लगा करती थी। 'नॉर्थ ज़ोन कल्चरल काउन्सिल (एनज़ेडसीसी)' वालों ने सम्मेलन को पुनर्जीवित किया। ख़ूब बड़े-बड़े कलाकारों को बुलाया। बड़ी अच्छी बात हुई। लेकिन एक तो ये लोग शुरू से रोब झाड़ने लगे, पहले ही सम्मेलन में बैनर को लेके मसला हो गया। महासभा को स्टेज पर बैनर नहीं लगाने दिया गया। जैसे-तैसे हमने एनज़ेडसीसी के साथ मिलकर तीन-चार साल काम किया। एक और बात हुई। ये लोग हमारी काफ़ी पुरानी चीज़ें पटियाला ले गए। अब पटियाला

में बाढ़ आ गयी और सब ख़राब हो गया। तीसरा जो मैं समझता हूँ कि एक नुक़सान ये हुआ कि जिस आर्टिस्ट को हरिवल्लभ वाले पाँच हज़ार दे के बुलाते थे उसे इन्होंने पच्चीस-पच्चीस हज़ार दे के बुलाया। अब अगली बार वो आर्टिस्ट कहने लगा कि मुझे तो पिछले साल पच्चीस मिले थे इस साल तीस लेना है। इसके बाद एनज़ेडसीसी ने विड्रॉ कर लिया और तब से सम्मेलन अब तक चल ही रहा है और जैसा चल रहा है वो आपके सामने है।"

(राकेश दादा)

जीत गए शहर वाले।

पर्दे के पीछे चले गए हुक्मरान।

लेकिन शहर वाले अब भी बुलाते हैं उन्हें अहस्तक्षेप और पैसों की थैली की उम्मीद से।

कौन हैं ये शहर वाले?

कैसे जुटता है मेला?

कहाँ से उमड़ती है भीड़? और क्या-क्या होता है इस मेले में?

चलिए एक चक्कर लगाते हैं।

हरिवल्लभ मेला है जालन्धरियों का। पूँजीपति दुकानदार, सरकारी मुलाज़िम और आम आदमी अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक़ करते हैं बाबा और मेले की सेवा। वो भी दिन थे जब लाला फ़क़ीरचंद अपनी साइकिल पर घूम-घूम कर हर घर से दो-दो रुपए इकट्ठा करते थे। आज कोई इकत्तीस हज़ार देता है, कोई इक्कीस हज़ार तो बहुत सारे लोग पाँच-पाँच सौ रुपए की छोटी राशियाँ भी देने वाले हैं।

इतने से क्या होगा? तीन दिन का सम्मेलन है। बिना बड़े कॉन्ट्रिब्यूशन्स के कैसे बात बनेगी? क्यों चिन्ता करते हो? 'लीडर इन्जीनियरिंग्स', 'शीतल ब्लैंकेट्स', 'अम्बिका फ़ोर्जिंग', 'अम्बिका ओवरसीज़', 'ओम सन्ज़', 'कैप्सन इंडस्ट्रीज़', 'प्रिंस रबर' ... तमाम बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हैं जालन्धर में जो दिल खोलकर डोनेशन देती हैं। और 'फगवाड़ा', लुधियाना वाले भी तो कुछ न कुछ मदद करते ही हैं। *पंजाब केसरी* वालों ने तो कमाल ही कर दिया। एक शाम भी प्रायोजित की और ऑडिटोरियम के लिए दस लाख रुपए भी दिए।

श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है यहाँ मन्दिर समुच्चय के दर्शन करने। इस बेमेल समुच्चय में अमरनाथ की गुफ़ा भी है तो तीन पिंडियों वाला देवी का स्वर्ण जड़ित मंदिर भी, पुराना काली मंदिर, शनि मंदिर, हनुमान मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर और कृष्ण के दाएँ हाथ बैठी राधा की मूर्ति वाला मंदिर भी।

नए बने इन मंदिरों की चकाचौंध ने यह बात तो दिमाग़ से ग़ायब ही कर दी कि यह प्राचीन देवी तालाब है जिसकी गणना इक्यावन शक्ति पीठों में होती है। जहाँ गिरा था दक्षयज्ञविनाशिनी का वाम स्तन, यहाँ स्थापित है विश्वमुखी त्रिपुरमालिनी का विग्रह रूप, जो कई बार लुटा और कई बार हुआ आक्रान्ताओं का शिकार, जहाँ बरसता था शाह सिकन्दर का कहर। फिर रमायी बाबा हिमगिरि[2] ने अपनी धूना और बाँध दिया शाह सिकन्दर को बनाकर बकरा। यहाँ चढ़ा जाते हैं श्रद्धालु इतना चढ़ावा कि सिक्के गिनने के लिए चुम्बकें इस्तेमाल होती हैं।

संगीत सुनने वालों के लिए संगीत के अलावा भी काफ़ी कुछ है यहाँ। खाने-पीने का पूरा बाज़ार है। मक्खन में डूबे लज़ीज़ नान से लेकर, न्यूट्री कुलचा, पॉपकॉर्न, गुड़ वाले गाजर का हलवा और चाउमीन तक सब मिलेगा, घबराइए नहीं रात के एक बजे भी मिलेगा।

इसके अलावा बीन फ़र्नीचर बिक रहा है, विज साहब[3] ने आपके लिए 'शीतल ब्लैंकेट्स' का स्टॉल भी लगवा दिया है। शहर का एक नौजवान अपनी ग्लास पेंटिंग्स लेकर बैठा हुआ है। लुधियाना का एक

बन्दा उभरते तबलचियों की सीडी बेच रहा है। किताबें नहीं हैं यहाँ, जबकि एक जालन्धरी ने ही हरिवल्लभ पर दो किताबें लिख रखी हैं।

हमको गरज़ श्रोताओं से।

रात के तीन बजे भी बबली और रंजीत कौर आराम से बैठी रईस ख़ाँ साहब को सुन रही हैं। ये शायद नहीं जानतीं कि लगभग साठ बरस पहले ज़माना वो भी था जब औरतें सुनने तो क्या स्टेज पर गाने भी नहीं आ पाती थीं। माहौल ऐतिहासिक ओलिम्पिक गेम्स जैसा था। जहाँ बड़ी से बड़ी महिला गायिका का भी आना निषिद्ध था। इस एनआरआई जोड़े से मिलिए, ये हनीमून मनाने पहाड़ न जाकर यहीं देवी तालाब में आ जमे हैं। कोई रोहतक से, कोई अम्बाला से, कोई लुधियाने से तो कोई नाहन से - ये दो-दो चार-चार लड़कियाँ अपने टीचर्स के साथ कॉम्पटीशन के लिए भी आयी हैं और सुनेंगी शायद पहली बार तमाम बड़े-बड़े कलाकारों को भी।

ये जनाब जगराते में गाते हैं, तो इस नौजवान के पिताजी ढोलक बजाते हैं। सबके लिए मौक़ा है पक्के राग सुनने का। ग़ज़ब का ड्राइविंग फ़ोर्स ढूँढ़ा है सुनील बाबू आपने भी- "यहाँ हरिवल्लभ में लड़कियों की भारी संख्या को देखकर लगता है कि अभी भविष्य में भारी मात्रा में लड़कियाँ शास्त्रीय संगीत सीखेंगी और भारी मात्रा में लोग उन पर मरेंगे। उन पर मरने वाले ये लोग शास्त्रीय संगीत को मरने नहीं देंगे।"

लेकिन ये क्या हुआ? यहाँ का ड्राइविंग फ़ोर्स क्यों कमज़ोर पड़ गया? अब क्यों नहीं आते यहाँ पंडित जसराज और अमजद अली ख़ाँ साहब? पिछले कुछ बरस से जसराज जी की जगह उनका नौजवान शिष्य हरिवल्लभ को परवान चढ़ाता है। और गाता है वही वन्देमातरम् गीत जिसे पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, नारायण राव व्यास तथा विनायक राव पटवर्धन जैसे दिग्गज गाया करते थे।

क्या बदल गया यहाँ पर? इंतज़ामिया, सामयीन या फिर ख़ुद फ़नकार। लगता है हवा के साथ-साथ थोड़ा या ज़्यादा तो सभी बदले हैं। इंतज़ामिया कहता है कि फ़नकार को दौलत चाहिए लेकिन बेचारे क्लासिकी मौसिकी वालों पर दौलत लुटाए कौन। ज़माना तो पॉप और रॉक का है। सरकारी इमदाद आटे में नमक जितनी होती है।

लेकिन हरिवल्लभ में पैसे का क्या काम? यहाँ तो हर कलाकार बाबा की समाधि पर हाज़िरी लगाने आता है। भई, मुँह से तो सब यही कहते हैं, 'बैक स्टेज' क्या होता है बाबा ख़ुद जानें!

अच्छी बात यह है कि नौजवान फ़नकार हर साल बाबा से आशीर्वाद लेने आते हैं और तहे दिल से गा-बजा कर जाते हैं। वैसे भी दिए की लौ को रौशन रखना नौजवानों की ही ज़िम्मेदारी है। अरे, यह संगीत सम्मेलन तो हमेशा से नौजवान फ़नकारों की रहनुमाई करता आया है। यही वो जगह है जहाँ घर छोड़कर आए जवान भीमसेन को विनायक राव पटवर्धन ने सवाई गंधर्व की राह बतायी थी।

सरदार साहब, जहाँ आप आग सेंक रहे हैं क्या आपको मालूम है कि जब आपने साइकिल पर चढ़ना सीखा था उस वक़्त यहाँ आपकी बोनफ़ायरनुमा आग नहीं बल्कि बड़े-बड़े साधुओं की धूनियाँ लगा करती थीं। और भेजते थे शहर के मुसलमान ठेकेदार मनों लकड़ी इन धूनियों के लिए। अमृतसर के लाला बिस्सूमल और लाला गुरुहर सहाय हर बरस देते थे लंगर के लिए इमदाद। संगीत की महफ़िल के लिए तम्बुओं का इंतज़ाम कपूरथला के राजा साहब का होता था। सरदार साहब आप शायद मुझे ज़्यादा बेहतर बताते कि इस मेले को पूरी तरह संगीत मेला बने अभी 58-60 बरस ही हुए हैं। पहले कहीं बैतबाज़ी होती थी, कहीं क़व्वालियाँ तो कहीं भेटें।

वक़्त लगेगा अभी संगीतज्ञों की ख़ातिर-तवज्जो सीखने में। कौन पहले स्टेज पर आएगा और कौन बाद में। वैसे इन्तज़ामिया में संगीतकार तो हैं नहीं और यदि हों भी तो कलाकारों के अपने-अपने व्यस्त

कार्यक्रम भी तो होते हैं।

भाई ये शास्त्रीय संगीत है। बड़े सुकून से सुना जाता है। ये पॉपकॉर्न, ये कॉफ़ी का कप और ऊपर से मोबाइल फ़ोन की घंटी! अरे ये तो मेला है, थोड़ी देर के लिए बाहर चले जाओ न। लोग नहीं मानेंगे। लेकिन 'स्पिक मैके' वाले कम से कम हिदायतें तो देते हैं।

लूट लेते हैं तबले वाले सारी वाहवाही। ख़ूब पिटती हैं तालियाँ किसी ज़ोरदार टुकड़े या ख़तरनाक तिहाई के बाद। अब इसमें जालन्धरियों का क्या दोष। दिल्ली में भी तो ऐसा ही होता है।

अब, इतना बड़ा आयोजन है तो फ़नकार, श्रोता और हुक्मरान सबके अपने-अपने नखरे और नाराज़गियाँ भी हैं। लेकिन इन सबके बीच जालन्धर में बसे ये मझले दर्जे के लक्ष्मीपुत्र हर साल लगातार तीन रात सरस्वती पुत्रों को अपने यहाँ बुलाते तो हैं। दिल्ली में संगीत मेला नहीं होता, कॉन्सर्ट्स होते हैं। रस की बरसात में भीगते तो हैं श्रोता लेकिन रस के समन्दर में डूब नहीं पाते। डूबना है तो हरिवल्लभ जाना होगा। यहाँ चार घंटे के बाद भी ऑडिटोरियम खाली नहीं होता। हरिबल्लभ की सभाएँ बारह-बारह घंटे चलती हैं।

नोट्स

(यह रिपोर्ताज अगस्त 2006 में सराय स्वतंत्र शोधवृत्ति के तहत एक श्रव्य-वृत्त के तौर पर प्रस्तुत किया गया था। इसमें वर्णित घटनाएँ 23 से 25 दिसंबर 2005 के सम्मेलन से जुड़ी हैं।)

1. श्री अश्वनी कुमार यानी कुमार साहब, सेवानिवृत डायरेक्टर जेनरल, सीमा सुरक्षा बल जो सन् 1948 से ही हरिबल्लभ की गद्दी के एकमात्र ट्रस्टी हैं। इन्हीं की देखरेख में संगीत सम्मेलन ने लोकप्रियता और प्रसिद्धि की तमाम ऊँचाइयों को छुआ है। अश्वनी कुमार जी ने 1982 में ही हरबल्लभ संगीत महासभा के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया था।

2 बताया जाता है कि बाबा हिमगिरि को महाराजा रणजीत सिंह ने देवी तालाब के आसपास की ज़मीन पट्टे पर दी थी। इससे संबंधित ताम्र अभिलेख कुछ समय पूर्व तक प्राचीन काली माता मंदिर के निकट देखे जा सकते थे। बाबा हरिबल्लभ बाबा हिमगिरि की परम्परा में तीसरे गद्दीनशीन महन्थ थे। इन्होंने ही सन् 1875 में अपने गुरु स्वामी तुलजागिरि की पुण्यतिथि पर साधु-संतों एवं भक्ति गायकों का दो दिवसीय सम्मेलन आरंभ किया था। आगे चलकर पंडित तोलो राम (अगले गद्दीनशीन महन्थ) ने सम्मेलन की लोकप्रियता को देखते हुए शास्त्रीय संगीत के तमाम बड़े-बड़े गायकों को सम्मेलन में आमंत्रित करना शुरू किया। कालान्तर में यह सम्मेलन बाबा हरिबल्लभ के नाम से ही विख्यात हो गया।

3 शीतल ब्लैंकेट्स के मालिक श्री शीतल विज इन दिनों हरबल्लभ संगीत महासभा के उपाध्यक्ष हैं।

नरेश कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के शोधार्थी हैं। सांस्कृतिक इतिहास तथा विक्लांगता और हाशिए के इतिहास में दिलचस्पी। फ़िलहाल दिल्ली की एक स्कूल में मास्टरी।